दादी जी ने बाबा के सर्व गुण और कलाओं को अपने में समा लिया

–दादी रतनमोहिनी जी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका

हम तो दादी जी को शुरू से देखती आई हैं। जब से यज्ञ शुरू हुआ है तब से हम भी हैं और दादी जी भी हैं। थोड़ा-सा ही फरक रहा। यह हैदराबाद की बात है। दादी ओम् निवास में शुरू से ही आई हुई थीं।

शुरू से ही दादी जी का लीडर का पार्ट रहा

ओम् निवास में जो भी छोटी-छोटी कुमारियाँ थीं, जैसे लच्छू बहन, ईशू बहन तथा गुलज़ार दादी भी थीं उनकी संभाल करने की ज़िम्मेदारी बाबा ने दादी जी को ही दी थी। गुलज़ार दादी उस समय 9 साल की थी, बाकी सब बहुत छोटी-छोटी थीं। दादी जी का पार्ट शुरू से ही बाबा के साथ-साथ यज्ञसेवा में सहयोगी बनने का रहा है। बाबा अपनी ज़िम्मेवारियाँ दादी जी को दिया करता था, साथ-साथ उनको सिखाता जाता था। आप समझ सकते हैं कि जब बाबा के साथ-साथ पार्ट बजाया है तो स्वाभाविक ही उनके अन्दर बाप जैसा ही कार्य करने की शक्ति आ गई। कारोबार कैसे चलाना है, किस प्रकार बातचीत करनी है, किस प्रकार संभालना है वो सब कला दादी में आ गईं। जैसे बाबा के अन्दर फीलिंग थी कि यह मेरा ही परिवार है, ये मेरे ही बच्चे हैं, ऐसे दादी के अन्दर भी, देखा जाये तो वही भावना रही। जब भी किसी से मिलती तो उनकी यही भावना होती थी कि यह मेरा ही परिवार है। बाबा का परिवार अर्थात् मेरा परिवार। दादी जी में सबके प्रति अपनापन होने के कारण सभी को भी दादी के प्रति अपनापन आता था, सब समझते थे कि दादी हमारी है।

दादी जी ने बाप समान सबकी पालना की

शुरू से ही कोई भी सेवा हो, बाबा दादी को ही भेजते थे। कहीं से भी निमंत्रण आये, दादी को ही भेजा जाता था। आप सबको पता है कि पहले-पहले जापान से निमंत्रण आया। उसमें भी पहला पार्ट दादी जी का रहा। बाबा समान सबको पालना देना, सबकी बातें समाना, सबके ऊपर ध्यान देना, ये सब दादी जी करती थीं। मधुबन आने वालों के लिए ठीक प्रबन्ध करना, प्रबन्ध को देखना, यह सब दादी ख़ुद करती थीं जैसेकि साकार बाबा स्वयं करते थे। रात को जब सब पार्टी वाले विश्राम करते थे तब बाबा दादी जी को और हमको भेजते थे कि जाओ बच्चे, जाकर देखो, सब ठीक-ठाक आराम से सोये हैं, उनके लिए सब सुविधाएँ हैं? फिर बाबा हमसे पूछता था, क्या समाचार है? उसी प्रकार, दादी जी ने भी बाबा जैसी पालना सबको दी और बाप के गुणों को भी अपने में धारण किया।

दादी जी बाबा समान बड़ी दिल वाली थीं

जैसे बाबा की दिल बड़ी थी, सबको खुलकर देना, खिलाना, पिलाना, ख़ुश करना आदि करते थे ऐसे ही दादी जी की भी सबके प्रति बड़ी दिल थी। किसी को कुछ चाहिए होता तो वो माँगने से पहले ही दे देती थीं। समझती थीं कि यह बाबा का बच्चा है, बाबा के घर सो अपने घर में आया है, उसको हर सुविधा मिलनी चाहिए। समझो, आज

की दुनिया के हिसाब से कोई साहूकार बाबा के घर में आया, वो अपने घर में कैसे रहता होगा, वो सोचकर ज़्यादा से ज़्यादा सुविधा देने का प्रयत्न करती थीं। बाबा कहा करते थे कि अगर आये हुए बच्चों को हम ठीक प्रबन्ध नहीं देंगे तो उनको यहाँ आकर अपना लौकिक घर याद आएगा। इसलिए बच्चों को ऐसा प्रबन्ध देना चाहिए कि उनको लौकिक घर, माँ-बाप, मित्र-संबंधी आदि याद न आयें। जो जैसा होता था, उसके अनुसार प्रबन्ध ख़ुद बाबा जाकर करवाता था। उसी प्रकार, दादी जी भी ऐसे किसी मेहमान के आने से पहले ही सारे प्रबन्ध देखती थीं और कराती थीं।

शुरू से ही बाबा के साथ रहने का, बाबा के साथ यज्ञसेवा करने का पार्ट दादी का रहा है। दादी को देखने का, उनके साथ रहने का, उनके साथ सेवा में सहयोगी बनने का पार्ट हमारा भी रहा। बाबा के साथ मम्मा भी रहती थीं लेकिन बाबा के साथ सेवा में कम जाती थीं। मम्मा का यज्ञ में अपना रोल था, वे यज्ञमाता थीं, पूरे यज्ञ को संभालने की ज़िम्मेदारी मम्मा की थी लेकिन बाबा के साथ सेवा में बाहर जाना ज़्यादा दादी जी का ही होता था।

दादी जी की प्युरिटी महान् थी

शुरू से ही हम देखते आये हैं कि दादी जी की प्युरिटी महान् थीं। हर प्रकार की प्युरिटी दादी जी में देखने में आती थी। किसी वस्तु, व्यक्ति, वैभव में दादी जी की आँख कभी डूबी नहीं। जहाँ प्युरिटी होती है, वहाँ हर प्रकार की सिद्धि आटोमेटिक होती है। प्युरिटी हर गुण का बीज है। जहाँ प्युरिटी होती है वहाँ सर्व गुण अपने आप आते हैं। उस हिसाब से दादी जी में हर गुण और शक्तियाँ अपने आप समाये हुए थे। साथ-साथ बाबा में जो कार्य करने की विधि और कलायें थीं वो भी आ गई थीं। हम उन क्वालिटीज को देखते भी रहते थे और सीखते भी रहते थे।

✪